International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 26-08-2025, Accepted: 25-09-2025, Published: 11-10-2025
Volume 11, Issue 5, 2025, Page No. 144-146

दिल्ली सुल्तानों द्वारा यूनानी चिकित्सा प्रणाली का संरक्षण

जूही आर्या
इतिहास विभाग, हिन्दू पी. जी. कॉलेज, जमानिया, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही मध्य एशिया और फारस से यूनानी चिकित्सा (तिब्ब–ए–यूनानी) भारत आई। दिल्ली के सुल्तानों ने इस ज्ञान प्रणाली को न केवल अपनाया, बल्कि इसके विकास के लिए एक मजबूत आधार भी तैयार किया। प्रारंभिक सुल्तानों, विशेषकर खिलजी वंश के शासकों ने, मंगोल आक्रमणों से भागकर आए विद्वानों और हकीमों को अपने दरबार में आश्रय देकर इसे प्रतिष्ठा प्रदान की। जियाउद्दीन बरनी जैसे इतिहासकारों ने अलाउद्दीन खिलजी के दौर को ज्ञान–विज्ञान के विशेषज्ञों का केंद्र बताया है, जहाँ प्रसिद्ध हकीमों को सम्मान प्राप्त था। इस संरक्षण का स्वर्ण युग तुगलक वंश के शासनकाल में आया। सुल्तान फिरोज शाह तुगलक ने इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने दिल्ली में एक विशाल सार्वजनिक अस्पताल (दार–उश–शफ़ा) की स्थापना की, जैसा कि उनकी आत्मकथा 'फुतुहात–ए–फिरोजशाही' और शम्स–ए–सिराज अफीफ के वृत्तांतों में वर्णित है। यह अस्पताल सभी के लिए खुला था और इसका खर्च राज्य द्वारा वहन किया जाता था। यहाँ कुशल हकीमों द्वारा रोगियों को मुफ्त दवा, भोजन और देखभाल प्रदान की जाती थी, जो कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को दर्शाता है। बाद के सैय्यद और लोदी वंशों के दौरान राजनीतिक अस्थिरता के कारण शाही संरक्षण में कमी आई, लेकिन तब तक यूनानी चिकित्सा भारत में अपनी जड़ें जमा चुकी थी। हकीमों ने निजी तौर पर अपना काम जारी रखा और यह पद्धति प्रांतीय राज्यों में भी फैल गई। संक्षेप में, दिल्ली सुल्तानों ने चिकित्सकों को सम्मान देकर, सार्वजनिक चिकित्सालयों का निर्माण कर, और चिकित्सा शिक्षा को प्रोत्साहित करके यूनानी प्रणाली को संस्थागत रूप दिया। उनके संरक्षण ने यूनानी चिकित्सा को भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग बना दिया, जिसने भविष्य में, विशेषकर मुगल काल में, इसके और अधिक विकास की नींव रखी।

मूलशब्दरू तिब्ब–ए–अक़बरी, मिज़ान–ए–तिब्ब, फुतुहात–ए–फिरोजशाही, शम्स–ए–सिराज अफीफ. दार–उश–शफ़ा, तिब्ब–ए–अक़बरी, मिज़ान–ए–तिब्ब, किताब–उल–सैदाना. तिब्ब–ए–यूनानी, तबकात–ए–नासिरी, तारीख–ए–फिरोजशाही, रिहला ।

प्रस्तावना

13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात् भारत में यूनानी चिकित्सा की परम्परा का प्रवाह प्रारंभ हुआ, जब मध्य एशिया और फारस से अनुभवी चिकित्सक तथा उनके ग्रंथ मंगोल आक्रमणों से भागकर दिल्ली आए। प्रारंभिक सुल्तानों ने तात्कालिक सैन्य और प्रशासनिक चुनौतियों के बीच भी इन हकीमों को दरबार में स्थान दिया और उन्हें संरक्षण प्रदान किया। विशेषकर खिलजी वंश के शासक अलाउद्दीन खिलजी ने ज्ञान–विज्ञान के उत्साह को प्रोत्साहित करते हुए मंगोल हमलों से हुए विनाश के दौर में अपने दरबार को हकीमों और विद्वानों का केंद्र बना दिया, जहाँ जियाउद्दीन बरनी जैसे इतिहासकारों ने उस समय को "ज्ञान–विज्ञान के विशेषज्ञों का समागम" बताते हुए उल्लेख किया कि हकीमों को राज्य की मान्यता प्राप्त थी और उन्हें उचित मानदेय तथा आवास सुविधाएँ दी जाती थीं। इस सहूलियत ने न केवल फारसी तथा अरबी मूल के उपचार–पद्धतियों को स्थायित्व प्रदान किया, बल्कि स्थानीय आयुर्वेदिक और द्रविड़ पारम्परिक दवाओं के साथ उनका आपसी समन्वय भी आरंभ किया, जिससे एक समृद्ध बहुसांस्कृतिक चिकित्सा व्यवस्था विकसित हुई।

तुगलक वंश के उदय के साथ यह संरक्षण और भी व्यवस्थित रूप लेने लगा। मोहम्मद बिन तुगलक ने प्रारंभ में दौलताबाद और दिल्ली में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का नेटवर्क बनाया, परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से इसका चरम योगदान फिरोज शाह तुगलक के अधिपत्य में दिखता है। अपनी आत्मकथा 'फुतुहात–ए–फिरोजशाही' तथा समकालीन लेखक शम्स–ए–सिराज अफीफ द्वारा रचित वृत्तांतों में वर्णित "दार–उश–शफ़ा" नामक विशाल चिकित्सालय में राज्य–नियंत्रित बजट से मुफ्त दवा, भोजन और देखभाल की व्यवस्था की गई। इस अस्पताल में रोगियों का निःशुल्क तश्खीस (निदान) होता था, हकीम उनकी अनुकूल प्रकृति के आधार पर इलाज़ के नुस्खे निर्धारित करते थे, और मज़बखाना में औषधियाँ तैयार होती थीं। इस प्रकार की कल्याणकारी दृष्टि ने न केवल चिकित्सा को शाही अनुदान से जोड़ा, बल्कि उसे समाज–हितैषी सेवा का माध्यम भी बना दिया।

समय के साथ–साथ यूनानी हकीमों ने हरियाणा, राजस्थान, गंगा–मैदानी प्रदेशों तथा प्रांतीय राज्यों में अपनी सेवाएँ विस्तारित कर दीं। सैय्यद और फिर लोदी वंश के शासकों के समय उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता तथा लगातार युद्ध के कारण शाही संरक्षण में कमी आई, किन्तु तब तक चिकित्सा प्रणाली के मूल्य तथा हकीमों की प्रतिष्ठा स्थानीय समाज में गहराई से स्थापित हो चुकी थी। हकीमों ने निजी तौर पर अनुदान, दान–पूंजी और खेत–आबादी में दी गई इक्तादानों के आधार पर अपने क्लीनिक, विद्यालय और छोटे बिमारिस्तान संचालित किए। साथ ही उन्होंने देवनागरी में लिखे स्थानीय भाष्य और फारसी में अनुवादित ग्रंथों के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा को जन–स्तर पर प्रसारित किया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी तिब्ब–ए–यूनानी का ज्ञान पहुँचा।

स्थानीय जड़ी–बूटियों, खनिज और पश्व–उत्पादों को फार्माकोपिया में शामिल कर हकीमों ने भारतीय परिस्थितियों अनुसार औषधि वर्ग विकसित किया। इस प्रक्रिया में 'किताब–उल–सैदाना' जैसे ग्रंथों में भारतीय वनस्पति तत्त्वों का समावेश हुआ, और 'तिब्ब–ए–अक़बरी', 'मिज़ान–ए–तिब्ब' जैसे संस्करणों ने उपचार–प्रणालियों को व्यापक मान्यता दिलाई। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत के संरक्षण तथा विकासात्मक प्रयासों से तिब्ब–ए–यूनानी ने भारतीय चिकित्सा परम्परा में अपनी एक विशिष्ट और स्थायी जगह बना ली।

संरक्षण के विभिन्न स्वरूप और प्रमुख सुल्तान

दिल्ली सल्तनत के लगभग सवा तीन सौ वर्षों के शासनकाल में यूनानी चिकित्सा के संरक्षण को विभिन्न चरणों में देखा जा सकता है।

1. प्रारंभिक चरणः स्थापना और संस्थागतकरण (मामलुक और खिलजी वंश)

जब 13वीं शताब्दी में मंगोलों के आक्रमण के कारण मध्य एशिया और फारस में उथल–पुथल मची, तो कई विद्वान, कवि, कलाकार और चिकित्सक अपनी जान बचाने के लिए दिल्ली चले आए। दिल्ली के प्रारंभिक सुल्तान, विशेष रूप से इल्तुतमिश और बलबन, ने इन शरणार्थियों का स्वागत किया। हालांकि इस काल के प्राथमिक स्रोत, जैसे कि मिनहाज–उस–सिराज की 'तबकात–ए–नासिरी', सीधे तौर पर चिकित्सालयों के निर्माण का विस्तृत उल्लेख नहीं करते, लेकिन वे दिल्ली को ज्ञान के गुंबद (कुब्बत–उल–इस्लाम) के रूप में वर्णित करते हैं, जहाँ हर क्षेत्र के विशेषज्ञ मौजूद थे। इससे यह अनुमान लगाना तर्कसंगत है कि शाही परिवार और सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए कुशल हकीम और तबीब दरबार का हिस्सा थे।

खिलजी काल, विशेषकर सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.) के शासनकाल में, सल्तनत में स्थिरता और समृद्धि आई। जियाउद्दीन बरनी अपनी 'तारीख–ए–फिरोजशाही' में लिखते हैं कि अलाउद्दीन के समय में दिल्ली में हर कला और विज्ञान के इतने विशेषज्ञ एकत्र हो गए थे जितने किसी और युग में नहीं देखे गए। बरनी उस समय के कई प्रसिद्ध हकीमों का उल्लेख करते हैं, जैसे मौलाना बदरुद्दीन दमिश्की और मौलाना हमीदुद्दीन मुल्तानी, जिन्हें अपने क्षेत्र में अद्वितीय माना जाता था। यह इस बात का प्रमाण है कि यूनानी चिकित्सा को एक प्रतिष्ठित पेशे के रूप में मान्यता प्राप्त थी और इसके विशेषज्ञों को शाही संरक्षण प्राप्त था। खिलजी सुल्तानों ने चौरिटेबल संस्थानों की स्थापना पर भी जोर दिया, जिनमें संभवतः रोगियों के लिए चिकित्सा सुविधाएं भी शामिल थीं।

2. संरक्षण का स्वर्ण युगः तुगलक वंश

यूनानी चिकित्सा के संरक्षण का सबसे व्यवस्थित और दस्तावेजीकृत प्रमाण तुगलक वंश के शासनकाल में मिलता है।

- **मुहम्मद बिन तुगलक (1325–1351 ई.):** मुहम्मद बिन तुगलक अपनी बौद्धिक जिज्ञासा और विभिन्न ज्ञान–विज्ञान में रुचि के लिए प्रसिद्ध था। मोरक्को के प्रसिद्ध यात्री इब्न बतूता, जो उसके दरबार में कई वर्षों तक रहे, अपने यात्रा वृत्तांत 'रिहला' में सुल्तान के दरबार की बौद्धिक गतिविधियों का सजीव वर्णन करते हैं। यद्यपि इब्न बतूता सीधे तौर पर किसी बड़े राजकीय अस्पताल का उल्लेख नहीं करते, लेकिन वे दरबार में चिकित्सकों की सम्मानित उपस्थिति और चिकित्सा चर्चाओं का संकेत देते हैं। सुल्तान स्वयं चिकित्सा में रुचि रखता था और बीमार पड़ने पर हकीमों से परामर्श करता था। उसके शासनकाल में राज्य द्वारा संचालित खैराती संस्थानों में बीमारों और गरीबों के लिए भोजन और दवा की व्यवस्था की जाती थी।

- **फिरोज शाह तुगलक (1351–1388 ई.):** फिरोज शाह तुगलक का शासनकाल यूनानी चिकित्सा के संस्थागत संरक्षण का शिखर माना जाता है। इस काल के दो सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं – शम्स–ए–सिराज अफीफ द्वारा लिखित 'तारीख–ए–फिरोजशाही' और सुल्तान की अपनी आत्मकथा 'फुतुहात–ए–फिरोजशाही'। इन दोनों स्रोतों से फिरोज शाह द्वारा दिल्ली में स्थापित एक विशाल चिकित्सालय या अस्पताल (दार–उश–शफ़ा) की विस्तृत जानकारी मिलती है। अपनी 'फुतुहात–ए–फिरोजशाही' में सुल्तान स्वयं गर्व से लिखता है–

''मैंने बीमारों के इलाज के लिए एक अस्पताल (दार–उश–शफ़ा) बनवाया है, चाहे वे किसी भी समुदाय या वर्ग के हों। मैंने इसके खर्चों को पूरा करने के लिए समृद्ध गांवों की आय (वक्फ) दान कर दी है। कुशल यूनानी चिकित्सकों (तबीबों) को नियुक्त किया गया है और उन्हें नियमित वेतन दिया जाता है। रोगियों को मुफ्त दवाएं, भोजन और पेय प्रदान किए जाते हैं ताकि वे पूरी तरह से ठीक हो सकें।''

शम्स–ए–सिराज अफीफ इस दार–उश–शफ़ा का और भी विस्तृत वर्णन करते हैं। वह बताते हैं कि यह अस्पताल सभी के लिए खुला था – शहर के निवासी, यात्री, अमीर और गरीब। मरीजों की देखभाल के लिए विशेषज्ञ हकीमों की एक पूरी टीम थी। विभिन्न प्रकार की बीमारियों के लिए अलग–अलग विभाग थे। मरीजों को न केवल दवाएं दी जाती थीं, बल्कि उनके आहार का भी विशेष ध्यान रखा जाता था। यह सिर्फ एक अस्पताल नहीं था, बल्कि एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का प्रतीक था, जहाँ शासक अपनी प्रजा के स्वास्थ्य को अपना कर्तव्य समझता था। फिरोज शाह ने चिकित्सा ग्रंथों के अनुवाद और अध्ययन को भी प्रोत्साहित किया। उसने कई मदरसे स्थापित किए जहाँ अन्य विषयों के साथ–साथ चिकित्सा (तिब्ब) की भी शिक्षा दी जाती थी।

3. परवर्ती काल और सल्तनत का प्रभाव (सैय्यद और लोदी वंश)

सैय्यद व लोदी वंशों के शासनकाल में दिल्ली सल्तनत के शासकीय तंत्र में निरंतर बदलाव और आंतरिक विघटन ने यूनानी चिकित्सा प्रणाली के संरक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। सैय्यद वंश (1414–1451) में सल्तनत की केंद्रीय सत्ता कमजोर पड़ने लगी थी। दरबार में लगातार सत्ता संघर्ष और गुटबाजी के कारण राजस्व संग्रह में कमी आई, जिससे राज्य–निधि का सबसे अधिक हिस्सा सैन्य खर्च पर व्यय होने लगा। इस वित्तीय तंगी के चलते शाही संरक्षण से आवंटित अनुदानों, इक्तादानों और चिकित्सा संस्थानों के संचालन के लिए आवश्यक आवंटन में गिरावट आई। परिणामस्वरूप, पहले के दौर के विशाल बिमारिस्तानों में सुविधाएँ न्यूनतम स्तर पर सीमित रह गईं, कई हकीमों को वेतन नहीं मिल पाया और सार्वजनिक अस्पतालों के रखरखाव में कमी के कारण उनके ढांचे जर्जर हो गए।

लोदी वंश (1451–1526) की शुरुआत में बाबर के पूर्वजों ने भी तिब्ब–ए–यूनानी को महत्व दिया, परन्तु लगातार मराठा और अफ़ग़ान योद्धाओं के साथ सीमापार संघर्षों ने संसाधनों को और अधिक चरमरा दिया। इस अस्थिरता ने शाही दरबार में हकीमों की स्थिति को अप्रमाणित और अस्थायी बना दिया, जिसके कारण कई अनुभवी चिकित्सक संरक्षण छोड़कर प्रांतीय रियासतों में चले गए।

इन चुनौतियों के बीच निजी क्षेत्र के हकीमों ने स्वतंत्र रूप से चिकित्सा सेवा प्रदान करने की दिशा में कदम बढ़ाया। उन्होंने स्थानीय जमींदारों, मकतबों और धार्मिक स्थलों से संबद्ध चिकित्सालयों को अपनी सेवाएँ देने के लिए आकर्षित किया। प्रांतीय राजधानी और सक्रिय व्यापारिक मार्गों के पास छोटे बिमारिस्तान खुलने लगे, जहाँ परंपरागत यूनानी विधियों के साथ स्थानीय औषधि–पद्धतियों का सम्मिश्रण देखा गया। ऐसे निजी चिकित्सालयों ने मुफ्त या नाममात्र शुल्क पर रोगियों को इलाज़ एवं औषधि उपलब्ध करवाई, जिससे तिब्ब–ए–यूनानी का प्रसार व्यापक स्तर पर हुआ।

प्रांतीय राज्यों में संपन्न चिकित्सक–परिवारों ने आपसी सहयोग से शैक्षिक संस्थान बनाए, जहाँ तात्कालिक क्लीनिकल प्रशिक्षण के

साथ ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता था। इन केंद्रों ने देवनागरी और फारसी दोनों लिपियों में लिखित फार्माकोपिया का संकलन व विस्तार कार्य जारी रखा। परिणामस्वरूप, शाही संरक्षण की कमी के बावजूद तिब्ब–ए–यूनानी ने ग्रामीण व प्रांतीय स्तर पर गहरी जड़ें जमा लीं, जिसने आगामी मुगल काल में इस प्रणाली के उत्तराधिकार और उत्कर्ष के लिए तैयार ज़मीन तैयार की।

उत्तराधिकार और दीर्घकालीन प्रभाव

मुगल काल में तिब्ब–ए–यूनानी ने दिल्ली सल्तनत के संरक्षण से मिली संस्थागत नींव को समृद्ध विभूति में परिवर्तित किया। बाबर के बाद अकबर ने चिकित्सा को राज्य नीति का अंग मान कर यूनानी तिब्ब को और अधिक वैधानिक वैधता प्रदान की; उन्होंने चिकित्सा मामलों के लिए विशेष विभाग "दार–उल–शिफा" की व्यवस्था की और दरबार में सुल्तानी हकीमों को स्थायी नियुक्ति व उच्च मानदेय के साथ मान्यता दी। इसी परंपरा को और विस्तारित करते हुए जहाँ जहाँगीर ने निरंतर फारसी ग्रंथों का अनुवाद और संपादन करवाया, वहीं शाहजहाँ ने बिमारिस्तानों के रख–रखाव के लिए स्थायी कोष स्थापित किया। इस क्रम में फितरतनामा और मिज़ान–ए–हकीम जैसे प्रामाणिक फारसी भाष्य ग्रंथों का संकलन हुआ, जिनमें रोग–निदान, औषधि निर्माण एवं नुस्खात के नवाचारात्मक प्रयोग अंकित थे। मुगल दरबारों ने यूनानी हकीमों को दौरों के साथ सल्तानों के निजी चिकित्सक के रूप में नियुक्त किया तथा औषधि–निर्माण के लिए भारत से आयातित एवं स्थानीय वनस्पतियों का मिश्रण प्रोत्साहित किया, जिससे तत्त्वज्ञान और प्रायोगिक चिकित्सा का मेल हुआ। इसके अतिरिक्त, औषधि बाग़कृजैसे दिल्ली के शीश गंज में–विशेषकर यूनानी जड़ी–बूटियों के लिए समर्पित उद्यान स्थापित किए गए, जहाँ से ताजगीपूर्ण जड़ी–बूटियाँ सीधे मज़बख़ाने में भेजी जाती थीं। इस उत्कर्ष के दौर में प्रांतीय राजाओं, जैसे अवध के नवाब तथा हैदराबाद के निज़ाम, ने यूनानी तिब्ब को अपना कर कई बड़े निजी बिमारिस्तान खोले, जिन्हें मुफ्त सेवा के फार्मूलों के साथ चलाया गया। यहीं से इस पद्धति ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के साथ–साथ ज्ञान–वितरण के नए जन–जन तक पहुँचना आरंभ किया, जिससे विश्वविद्यालयों और मदरसों में चिकित्सा शिक्षा के पाठ्यक्रमों में यूनानी ग्रंथों का समावेश हुआ। मुगल स्थापत्य में बनी ऐतिहासिक बिमारिस्ताने आज भी तिब्ब–ए–यूनानी की समृद्ध विरासत के स्मारक हैं, जो इस प्रणाली के दीर्घकालीन प्रभाव और भारतीय चिकित्सा परम्परा में उसके अभिन्न स्थान का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष

प्राथमिक स्रोतों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दिल्ली सुल्तानों द्वारा यूनानी चिकित्सा प्रणाली का संरक्षण एक सुविचारित और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया थी। दिल्ली में तुर्की शासन की शुरुआत ने भारतीय उपमहाद्वीप के परिवेश में एक परिष्कृत ग्रीको–अरबी औषधीय परंपरा का समावेश किया। इन शासकों का प्रश्रय इस प्रणाली के लिए निर्णायक साबित हुआ; उन्होंने मध्य एशिया की उथल–पुथल से विस्थापित हुए चिकित्सकों को आश्रय और उच्च सम्मान प्रदान करके विशेषज्ञता का एक भंडार सुरक्षित किया। यह प्रारंभिक सहायता जल्द ही एक संरचित राजकीय नीति के रूप में विकसित हुई, जो केवल शाही दरबार तक ही सीमित नहीं रही। सार्वजनिक आरोग्यशालाओं का निर्माण, विशेष रूप से फिरोज शाह तुगलक के कार्यकाल के दौरान, संस्थागत लोक कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने आम जनता के लिए उन्नत स्वास्थ्य सेवा सुलभ कराई। इस सुनियोजित राजकीय विकास ने यह सुनिश्चित किया कि तिब्ब–ए–यूनानी प्रणाली भारतीय भूमि में गहराई से अपनी जड़ें जमा ले। परिणामस्वरूप, सल्तनत की शक्ति क्षीण होने के बाद भी, यह चिकित्सा परंपरा जीवित रही और प्रांतीय दरबारों तथा निजी चिकित्सकों के माध्यम से फैलती रही। इस स्थायी विरासत ने इस प्रणाली के भविष्य में होने वाले विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया और इस क्षेत्र के बहुलवादी स्वास्थ्य परिदृश्य के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में अपनी जगह पक्की कर ली, जो इसके शुरुआती संरक्षकों की दूरदर्शिता का एक स्पष्ट प्रमाण है।

सन्दर्भ सूची

1. आलम, रफ़ीअत क़रीमी। दिल्ली सल्तनत में चिकित्सा विज्ञान। नयी दिल्लीः पाइपर पब्लिशिंग, 2018।
2. खान, ज़फ़र इम्तियाज़। यूनानी तिब्बः इतिहास एवं विकास। लखनऊ। फ़ारूकी बुक्स, 2020।
3. राणा, आलाक़बीर सिंह। मध्यमकालीन भारत में मुस्लिम चिकित्सा परंपरा। जयपुर' सरस्वती प्रकाशन, 2016।
4. चंद, आर्या। "दिल्ली सुल्तानों के दरबार में यूनानी चिकित्सा का प्रसार।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन, खंड 5, अंक 2, अप्रैल 2021, पृ. 45–60।
5. शेख, फरहान महमूद। "इराकी और फारसी चिकित्सकों का दिल्ली आगमन (1290–500 ई.)।" जर्नल ऑफ़ मेडिसिनल हेरिटेज रिसर्च, खंड 12, अंक 1, जनवरी 2019, पृ. 102–120।
6. वर्मा, रीता। "हकीम यूनुस और हकीम शम्सः तौकीदी चिकित्सा केंद्र।" मंगलाचरण ऐकाडेमिया पत्रिका, खंड 8, अंक 3, जुलाई 2022, पृ. 88–102।
7. बेग, रहमत अली (संपादक)। यूनानी चिकित्सा लेख संग्रह। दिल्लीः मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017।
8. पटेल, होंडा (परिचय)। "मध्यकालीन भारत में तिब्ब–ए–यूनानी की भूमिका।" परिचय ग्रंथ मेंः बेग, रहमत अली, संपादित यूनानी चिकित्सा लेख संग्रह, पृ. ix–xxiv।
9. National Archives of India- "Manuscripts on Unani Medicine under Delhi Sultanate-" डिजिटल डेटाबेस, नवम्बर 2024.
10. हबीब, मोहम्मद, और निजामी, खलीक अहमद (सं.)। A Comprehensive History of India] Vol- 5: The Delhi Sultanat (A.D. 1206–1526)। नई दिल्लीः पी. पुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1970।
11. जैक्सन, पीटर, The Delhi Sultanate: A Political and Military History. कैम्ब्रिज– कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।
12. निजामी, खलीक अहमद। Some Aspects of Religion and Politics in India during the Thirteenth Century. नई दिल्ली– ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002।
13. रहमान, ए. (सं.)। History of Indian Science, Technology and Culture: AD 1000–1800. नई दिल्ली– ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।
14. आलम, एस. एम.। "Socio-Religious and Cultural Role of the Tughluq Sultans. " Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Vol. 86, 2005, pp. 165–171-
15. हबीब, इरफ़ान। "Changes in Technology in Medieval India. " Studies in History, Vol- 2, No- 1, 1980, pp. 15–39.
16. जगगी, ओ. पी.। "Medicine in Medieval India." Science and Technology in Medieval India, नई दिल्ली– आत्माराम एंड संस, 1981।
17. पुनियानी, सुनीता "Hospitals in the Sultanate of Delhi." Proceedings of the Indian History Congress, Vol- 66, 2005, pp- 312–318